International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 01-08-2026, Accepted: 31-08-2026, Published: 15-09-2026
Volume 8, Issue 3, 2026, Page No. 49-52

छत्तीसगढ़ की जनजातियों में स्वदेशी ज्ञान लोक साहित्य एवं पर्यावरण चेतना

डॉ. वर्षारानी पाटले
अतिथि व्याख्याता, हिन्दी विभाग, ठाकुर छेदीलाल शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जांजगीर चांपा, छत्तीसगढ़, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijrh.2026.8.3.8062

सारांश
भारत में जनजाति संस्कृति अपने लोग ज्ञान प्राकृतिक केंद्रित होने के कारण विशिष्ट स्थान रखती है । छत्तीसगढ़ में विशेष रूप से गोड़, कमार, उरांव, आदि जनजातीय ने पीढ़ी दर पीढ़ी लोकगीतों, लोक कहावतो, और सांस्कृतिक अनुष्ठानों के माध्यम से स्वदेशी ज्ञान को सुरक्षित करते आए हैं। यह ज्ञान केवल सांस्कृतिक विरासत का परिचय नहीं करता अपितु पर्यावरण संरक्षण,जैव विविधता, प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपयोग एवं नैतिक मूल्यों का आधार भी है। वैश्वीकरण की दौड़ में शहरीकरण, आधुनिकीकरण, नवीन तकनीक के उपयोग से जनजाति जीवन शैली प्रभावित हो रहा है जिसे पारंपरिक लोग जीवन एवं ज्ञान को चुनौती का सामना करना पड़ रहा है । छत्तीसगढ़ की जनजातियाँ अपनी समृद्ध स्वदेशी ज्ञान परंपरा, लोक साहित्य और पर्यावरण के प्रति गहरी संवेदनशीलता के लिए प्रसिद्ध हैं। उनके जीवन का आधार जल, जंगल और जमीन हैं, इसलिए वे प्रकृति को केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवनदाता और पूजनीय मानते हैं। जनजातीय समुदायों ने वर्षों के अनुभव से कृषि, वन संरक्षण, औषधीय पौधों, जल स्रोतों तथा जैव विविधता के संरक्षण का महत्वपूर्ण ज्ञान विकसित किया है। यह स्वदेशी ज्ञान आज भी उनके दैनिक जीवन और आजीविका का आधार है। जनजातीय लोक साहित्यकृजैसे लोकगीत, लोककथाएँ, लोकगाथाएँ, कहावतें और लोकनृत्य— प्रकृति के प्रति प्रेम, सम्मान और संरक्षण का संदेश देते हैं। उनके पर्व–त्योहार, जैसे करमा, नवाखाई और मड़ई, प्रकृति तथा कृषि से जुड़े हुए हैं और पर्यावरण के साथ संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। जनजातीय समाज आवश्यकता के अनुसार ही वन संसाधनों का उपयोग करता है तथा वृक्षों, नदियों और पर्वतों को पवित्र मानकर उनकी रक्षा करता है। इस शोध के माध्यम से छत्तीसगढ़ के जनजातीय के लोक साहित्य में निहित स्वदेशी ज्ञान और पर्यावरण चेतना का अध्ययन करना तथा पारंपरिक एवं आधुनिकता के मध्य स्थित संबंध का अध्ययन करना है । जनजाति लोक संस्कृति में निहित स्वदेशी ज्ञान का सतत विकास, सांस्कृतिक संरक्षण तथा पर्यावरण संतुलन की दृष्टि से यह विषय आज भी प्रासंगिक है । अतः इस ज्ञान परंपरा के संरक्षण, प्रलेखन एवं अकादमिक अध्ययन को बढ़ावा देना समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है ।

मूल शब्दः छत्तीसगढ़, जनजाति, स्वदेशी ज्ञान, लोक साहित्य,पर्यावरण चेतना, आधुनिकता सतत विकास

प्रस्तावना

भारत विविध संस्कृतियों जनजातीय एवं लोक परंपराओं का देश है । छत्तीसगढ़ भारत के उन राज्यों में से एक है जहां एक बड़ी संख्या में जनजाति समुदाय निवास करती आ रही है । गोड़, हल्बा, उरांव, भैगा, कमार भतरा ,मुरिया,मारिया, अबूझमाडिया एवं अन्य जनजाति अपने विशेष सांस्कृतिक पहचान, लोकजीवन एवं स्वदेशी ज्ञान परंपरा के कारण छत्तीसगढ़ को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनती आ रही है । इन सभी समुदायों का जीवन प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित किया हुआ है । भूमि,जंगल, जल, वन्य जीव, वनस्पतियां आदि उनके जीवन के अभिन्न अंग हैं । यही कारण है कि उनके लोक साहित्य में प्रकृति के प्रति सम्मान, संरक्षण एवं सह अस्तित्व की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है ।

किसी समुदाय द्वारा अपने अनुभव लोक परंपरा एवं जीवन शैली द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी अर्जित और सुरक्षित ज्ञान को ही स्वदेशी ज्ञान कहा जाता है । स्वदेशी ज्ञान केवल आजीविका का साधन नहीं अपितु यह सामाजिक व्यवस्था,सांस्कृतिक मूल्य, कृषि, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, लोक कला एवं नैतिक जीवन दृष्टि का भी आधार होता है । छत्तीसगढ़ की जनजातियों ने इस ज्ञान को मौखिक परंपरा के रूप में सुरक्षित रखा है । लोक कथाएं,लोकगीत, लोक परंपरा, कहावतें, मुहावरे,धार्मिक अनुष्ठान इस ज्ञान के प्रमुख माध्यम है ।

हिंदी साहित्य में जनजाति विमर्श अपेक्षाकृत नया विषय है परंतु वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता निरंतर बढ़ती आ रही है। जनजाति साहित्य एवं लोक साहित्य भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है । जनजाति समुदाय ने हमेशा मानवीय मूल्य, पर्यावरणसंरक्षण,सामुदायिक जीवन, श्रम, सामानता कों अपने जीवन का आधार बनाए रखा है । आज जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण प्रदूषण, जैव विविधता के क्षरण जैसे वैश्विक समस्याएं गंभीर होती जा रही है, ऐसे समय में जनजाति समुदायों का स्वदेशी ज्ञान आधुनिक समाज के लिए प्रेरणा स्रोत बन रहा है । शहरीकरण, औद्योगिकरण, वैश्वीकरण, आधुनिक तकनीक के तीव्र प्रभाव के कारण जनजाति समाज की भाषा, लोक परंपराओं में बदलाव हो रहा है । आज की नवीन पीढ़ी लोक परंपरा से अनजान होना,लोक भाषाओं का सीमित प्रयोग करना, प्राकृतिक संसाधनों पर बाहरी दबाव का बढ़ना इस अमूल्य धरोहर के संरक्षण के लिए चुनौती बन गया है । ऐसे ही समय में जनजाति समुदाय में विद्यमान स्वदेशी ज्ञान का अध्ययन अकादमिक दृष्टि से अध्ययन करने के साथ–साथ सांस्कृतिक संरक्षण एवं सतत विकास के लिए आवश्यक हो गया है ।इस शोध आलेख में छत्तीसगढ़ के प्रमुख जनजातियों के लोक साहित्य में निहित स्वदेशी ज्ञान पर्यावरण चेतना तथा परंपरा एवं आधुनिकता के अंतर संबंधों का विश्लेषण किया जाएगा । साथ ही यह समझने का प्रयास किया जाएगा की जनजातियां लोक संस्कृति आज के समय में किस प्रकार पर्यावरण संरक्षण,लोक संस्कृती की अवधारणा एवं सतत विकास को किस प्रकार सुदृढ़ करता आ रहा है।

छत्तीसगढ़ की जनजातियां एवं स्वदेशी ज्ञान

छत्तीसगढ़ी राज्य में जनजातियां संस्कृति अत्यधिक समृद्धि है।इस राज्य में लगभग एक तिहाई भाग जनजाति का है । गोड़,हल्बा,मुड़िया, मडिया, अबूझमाडिया, कमार, भतरा, उरांव, बिरहोर, जैसी जनजाति अपनी विशेष लोक संस्कृति,जीवन पद्धति,लोग विश्वास, भाषा, कला और प्राकृतिक केंद्रित संस्कृति

के लिए जानी जाती है । जनजाति समुदाय गहन रूप से जल जंगल भूमि से जुड़े होते हैं । उनके धार्मिक अनुष्ठानों लोग परंपराओं दैनिक जीवन में प्रकृति के प्रति आदर के भाव स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं । हिंदी साहित्य में जनजाति समुदाय को केवल अध्ययन के रूप में नहीं अपितु भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग के रूप में देखा गया है। जनजाति लोक साहित्य उसके सामाजिक इतिहास, संस्कृत स्मृति एवं जीवन दर्शन का जीवंत दस्तावेज है ।

जिसे कोई समुदाय निरंतर संवाद अनुभव प्रकृति के साथ तालमेल सामुदायिक जीवन के आधार पर सीखना है उसे स्वदेशी ज्ञान कहा जाता है । यह ज्ञान पुस्तकों में नहीं बल्कि लोकगीत, लोकाचार, लोग कहावतों, कृषि पद्धति, औषधि परंपरा,धार्मिक अनुष्ठानो में मिलता है । छत्तीसगढ़ के जनजातियों का स्वदेशी ज्ञान उनके वनों के संरक्षण एवं जैव विविधता, औषधि पौधों का पारंपरिक उपयोग, वर्षा, ऋतु परिवर्तन एवं कृषि अनुभव, सामुदायिक श्रम एवं संसाधनों का साझा उपयोग, लोक न्याय एवं सामाजिक अनुशासन की परंपराएं जैसे विभिन्न क्षेत्रों में दिखाई देते हैं । यह ज्ञान उनके जीवन यापन के साधन होने के साथ–साथ नैतिक मूल्य सामाजिक समरसता एवं पर्यावरण संतुलन का आधार है ।

लोक साहित्य जनजाति समुदाय के सामाजिक चेतना का दर्पण है । बैगा जनजाति स्वयं कों वनों का संरक्षक मानता है एवं वर्षों की कटाई को धार्मिक अनुष्ठानों की दृष्टि अनुचित मानते है । हल्बा और उरांव समुदाय के लोग का कृषि, नदी, पर्वतों के प्रति गहरा सम्मान होता है । इन सब से पता चलता है की जनजाति समुदाय के लिए जल जंगल भूमि केवल आर्थिक साधन साधन के रूप में ही नहीं देखते बल्कि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना के रूप में देखते हैं ।

हिंदी साहित्य में जनजाति विमर्श

जनजाति विमर्श का समकालीन हिंदी साहित्य में विशेष महत्व है। क्योंकि इस विमर्श का केंद्रीय बिंदु जनजातीय समाज की अस्मिता, सांस्कृतिक पहचान, भाषा,लोक साहित्य, लोकमान्यताओं और जीवन संघर्ष होता है। जनजाति लोक साहित्य यह स्पष्ट करता है कि विकास भौतिक प्रगति के साथ–साथ प्रकृति समाज और संस्कृति के मध्य संतुलन स्थापित करना है। शायद यही कारण है कि हिंदी साहित्य में जनजातीय चेतन आज पर्यावरण विमर्श तथा सांस्कृतिक अध्ययन का महत्वपूर्ण विषय बन गया है। छत्तीसगढ़ की जनजाति लोक परंपराओं में पर्यावरण चेतना एवं स्वदेशी ज्ञान – लोक साहित्य का अध्ययन कर हम छत्तीसगढ़ की जनजातीय संस्कृति को अच्छे से समझ सकते हैं जनजाति समुदाय का पारंपरिक ज्ञान लिखित ग्रंथों के बजाय मौखिक परंपरा में सुरक्षित होता है। लोकगीत, लोक गाथा,लोक कथा, मिथक, कहावत, मुहावरे,अनुष्ठान, त्योहार और सामुदायिक स्मृतियां जनजाति परंपरा का मुख्य माध्यम है। इन लोक अभिव्यक्तियों में मनुष्यों और प्रकृति के बीच संबंध को उपयोगिता के आधार पर नहीं बल्कि आत्मीयता और सह अस्तित्व के आधार पर देखा गया है। जनजातीय समुदाय में वन केवल लकड़ी या अन्य वन उपज प्राप्त करने का माध्यम नहीं वह उनके भोजन,औषधि,आवास,रोजगार,धार्मिक विश्वास,सांस्कृतिक पहचान का आधार है। इसीलिए प्रकृति के विभिन्न तत्वों का उल्लेख जनजाति लोक साहित्य में बार–बार दृष्टव्य होता है।

लोकगीतों में प्रकृति और जीवन का संबंध

आदिवासी जनजीवन के लोकगीतों में वर्षा, जंगल, कृषि, नदी, पर्वत,पशु पक्षियों,कृषि एवं वनस्पतियों का व्यापक उल्लेख मिलता है। कृषि आधारित जीवन होने के कारण वर्ष और ऋतु चक्र का सीधा संबंध सामुदायिक जीवन से रहता है । वर्षा ऋतु आते ही बीज बोने से लेकर फसल की कटाई एवं नई फसल का स्वागत से संबंधित गीतों में प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त किया जाता है । यह गीत मनोरंजन के साथ–साथ नहीं पीढ़ी को प्रकृति के साथ कृतज्ञता रखने का ज्ञान देती है । वन में कौन से वृक्ष उपयोगी है, कौन से मौसम में किस प्रकार की कितनी औषधि उपलब्ध होती है, कृषि का उपयुक्त समय क्या है, प्रकृति संसाधनों का किस प्रकार उपयोग किया जाना चाहिए ऐसे अनेक जानकारियां लोक परंपरा में अंतर निहित होता है। इस आधार पर जनजाति लोकगीतों को मौखिक ज्ञान संरचना के रूप में देखा जा सकता है।

लोक कथाओं और मित्र को में प्रकृति की उपस्थिति

जनजातीय लोक कथाओं में प्रकृति के अनेक तत्व मानवीय चरित्र के समान प्रस्तुत होते हैं। वृक्ष नदिया पर्वत पशु पक्षी और अन्य प्राकृतिक तत्व कथानक को सक्रिय बनाते हैं । इसमें प्रकृति और मानव के मध्य एक आत्मीयता का भाव स्थापित होता है । कई जनजाति मिथिकिय परंपराओं में समुदाय का उद्भव प्राकृतिक तत्व वन, वृक्ष, पहाड़ या जल स्त्रोत से हुआ है ऐसा माना जाता है । ऐसी मान्यताएं प्रकृति को पवित्रता प्रदान करती है जब किसी पेड़ पर्वत जल स्रोत को सामुदायिक आस्था से जोड़ दिया जाता है तो उसके संरक्षण को सामाजिक आवश्यकता स्वत जन्म लेती है । इससे ज्ञात होता है कि जनजातीय मिथक पर्यावरण नैतिकता के वाहक हैं वह मानव को प्रकृति का स्वामी नहीं मानता बल्कि उसके अनुसार मानव एवं प्रकृति सहभागी है।

गोंड़ समुदाय का लोग ज्ञान और पर्यावरण चेतना

गोंड़ समुदाय छत्तीसगढ़ की प्रमुख जनजाति समुदाय में से एक है। गोंड समाज की सांस्कृतिक परंपराओं में जंगल और प्राकृतिक संसाधन का महत्वपूर्ण स्थान है उनके लोकगीतों लोक कथाओं चित्रात्मक परंपराओं और धार्मिक विश्वासों में प्रकृति के विविध रूप दिखाई देते हैं । गोंड़ जनजातीय के लोग बुढा देव की पूजा करते हैं जिसका निवास स्थान सजा वृक्ष है। इन लोगों के गांव में जंगलों के एक भाग में देवगुड़ी नामक एक पवित्र स्थल होता है जहां पेड़ काटना, शिकार करना, पौधों को नुकसान पहुंचाना सख्त मना होता है । यह परंपरा जैव विविधता के संरक्षण का बेहतरीन तरीका है । सजा, महुआ,पीपल,बरगद जैसे वृक्षों की पूजा गौर संस्कृति का अभिन्न अंग है । गॉड जाति के लोग पारंपरिक बेग होते हैं वह पेड़ की पत्तियां एवं छालों जड़ों से अनेक प्रकार के बीमारियों का इलाज करते हैं । वे पौधों का उपयोग किस प्रकार करते हैं जिसे पौधा नष्ट होने के बजाय पुनः जीवित होता है । गोंड़ पेंटिंग्स में मुख्य रूप से पेड़, पौधे,पशु,पक्षी जैसे मोर, हिरण,हाथी की आकृतियां होती है । कर्मशाला दरिया जैसे लोक नृत्य के माध्यम से नदियों,पर्वतों और वनों के प्रति आभार प्रकट करते हैं उनके निवास स्थान मिट्टी बस और लकड़ी के बने होते हैं जो पर्यावरण के अनुकूल होते हैं।

(4) बैगा समुदाय और पारंपरिक पर्यावरण ज्ञान – बैगा जनजाति छत्तीसगढ़ के माइकल पर्वतमाला और जंगलों में निवास करने वाली विशेष रूप से कमजोर जनजाति समुदाय है। इस समुदाय के लोग जंगल के रक्षक और पारंपरिक औषधि शास्त्री माने जाते है । बैग समुदाय का मानना है की धरती उनकी मां है और हल चाल कर उसका सीना चिरना एक तरह का पाप है । इसीलिए वे बेवर खेती करते हैं जिसमें पेड़ की शाखों को काटकर जलते हैं और राख पर छिड़कते हैं, एक ही खेत में एक साथ कई तरह के अनाज उगते हैं जिससे मृदा की उर्वरता शक्ति बढ़ती रहे । साथ ही वे तीन चार साल खेती करने पर उसे जमीन को खाली छोड़ देते हैं जो फसल चक्र की दृष्टि से सर्वोत्तम है । बैगा जनजातियों को जड़ी बूटियां पेड़ के जड़ और छालों से सैकड़ो बीमारियों का उपचार करते हैं । बैगा महिलाएं अपने शरीर पर

मोर, हिरण,सजा के पत्ते, नदियों और पहाड़ों की आकृति का गोदना बनवाती हैं । बैगा संस्कृति में गोदना का गहरा धार्मिक और पर्यावर्णीय महत्व है । उनकी मान्यता है कि गोदना ही एकमात्र चीज है जो मृत्यु के बाद आत्मा के साथ जाती है । बैगा लोग बाग को अपना भाई या रक्षक बागेश्वर देव मानते हैं । बैग जनजातियों के जीवन से संदेश मिलता है कि मनुष्य प्रकृति पर हावी होने के बजाय उसके साथ संतुलन बनाकर ही लंबे समय तक जीवित रह सकता है।

मोरिया जनजाति और सामुदायिक जीवन दृष्टि

मुरिया जनजाति छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग में पाई जाने वाली गोड़ की उपजाति है । मुरिया समाज अपनी अनूठी संस्कृत व्यवस्था, कला,संस्कृत लोकाचार और सामुदायिक जीवन दृष्टि के लिए विश्व प्रसिद्ध है। मुरिया जनजाति का जीवन दर्शन व्यक्तिगत पहचान से अधिक सामुदायिक एकजुटा सहयोग और सह अस्तित्व पर आधारित है । मुरिया समाज की सामुदायिक जीवन दृष्टि की दूरी उनका पारंपरिक युवा गृह घोटुल है। यह सामाजिक संस्कार व प्रशिक्षण का पाठशाला है जहां युवक युवती को गांव की सुरक्षा त्योहारों का आयोजन, अतिथि सत्कार, और विपत्तियों में एक दूसरे की सहायता करना का पाठ सिखाया जाता है। मुरिया समाज में व्यक्तिगत लाभ के स्थान पर सामूहिक सहयोग को प्राथमिकता दी जाती है वे फसल की बुवाई,कटाई,मकान निर्माण सभी कार्यों को पूरा गांव बिना किसी दैनिक मजदूरी के एक साथ एक दूसरे की मदद से पूरा करते हैं। यदि गांव में किसी परिवार के पास अनाज कम पड़ जाए तो पूरा समुदाय मिलकर उसकी सहायता करता है। भोजन या वन उपज का संग्रहण व्यक्तिगत की अपेक्षा मिलकर साझा करते हैं। मुरिया जनजाति में निर्णय लेने की व्यवस्था पूर्ण रूप से पारदर्शी एवं लोकतांत्रिक होता है गांव का मुखिया सिरहा,मांझी,गायत समुदाय के बुजुर्गों के साथ बैठकर निर्णय लेता है । इस जनजाति में लिंग समानता है यह लोग विवाह जीवनसाथी का चुनाव,घरेलू मामलों में महिलाओं की राय को प्राथमिकता देते हैं। फसल की अच्छी पैदावार और गांव को समृद्ध बनाने के लिए लिंगो पेन देवता को प्रसन्न करने के लिए काकसर नृत्य करते हैं।

हल्बा एवं अन्य जनजातीय समुदाय के लोग जीवन में प्रकृति

हवा शब्द की उत्पत्ति हाल से मानी जाती है । ऐतिहासिक रूप से यह समाज उन्नत कृषक एवं बस्तर के राजाओं का रक्षक रहा है । हल्बा जनजाति के लोग खेती की प्रारंभ मिट्टी पूजा और बीज पहानी त्यौहार मना कर करते हैं जब तक ग्राम देवता और धरती माता को नहीं फसल का पहला अनाज नहीं चढ़ाते तब तक यह लोग उसका उपयोग घर में नहीं करते है । हल्बा समाज की भाषा हब बस्तर की सभी जनजाति समुदाय के मध्य संवाद का कार्य करती है। इसकी बोली, लोकगीतों,मुहावरों के द्वारा वनों,नदियों ऋतुओं का सूक्ष्म वर्णन मिलता है।गोड़, उरांव, भतरा की सामाजिक संरचना टोटम अर्थात गोत्र प्रतीकों पर आधारित होती है जिसमें पेड़, पौधों, जानवरों,पक्षियों,जलचरों के नाम होते हैं जैसे नाग,कछुआ,महुआ, बाघ, चील आदि जिस व्यक्ति का गोत्र जिस भी जीव या पेड़ के नाम पर होता है वह उसको कभी नुकसान नहीं पहुंचता । यह नियम जैव विविधता को बनाए रखने में सहायता करता है । जनजातीय लोग जीवन के सभी त्योहार प्रकृति के बदलाव और उपज से संबंधित होते हैं। उराव समुदाय के सरहुल पर्व साल वृक्ष में फूल खिलने पर बसंत ऋतु के स्वागत के लिए मनाते हैं । हल्बा, गोड़, भतरा जनजातियों के लोग नवा खाई पर्व धान की फसल पकने पर प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए मनाते हैं । हल्बा,कमार जाति के व्यक्ति अक्ति त्यौहार वैशाख में नए कृषि वर्ष की प्रारंभ और मृदा की उर्वरा शक्ति को बनाए रखना के लिए मनाते हैं। बस्तर की दशहरा 75 दोनों जो वनों की लकड़ी और प्रकृति की शक्तियों की पूजा पर केंद्रित है सभी जनजातियों द्वारा मनाया जाता है। हल्बा, कमार और पहाड़ी कोरबा जैसी जनजातियों का आर्थिक और पोषण संबंधी जीवन महुआ के फूल, छींद का रस,ताड़ी, प्राकृतिक मशरूम कोदो,कुटकी और विभिन्न प्रकार के भाजी जैसे प्रकृति के उपहार पर निर्भर होता है । इस समुदाय के लोग बास से टोकरी, छुपा बनाते हैं,मिट्टी के बर्तन और घास फूस के घर जो पर्यावरण अनुकूल जीवन शैली का प्रमाण है । छत्तीसगढ़ की जनजातियों का लोक जीवन हमें यह सिखाता है की प्रकृति का अति दोहन करने के बजाय उसके साथ संतुलन बनाकर जीना ही वास्तविक विकास है।

लोक भाषा और स्वदेशी ज्ञान का संरक्षण

लोक भाषा और स्वदेशी ज्ञान एक सिक्के के दो पहलू हैं। स्वदेशी ज्ञान में औषधिय पौधों की जानकारी, कृषि तकनीकी, मौसम का पूर्वानुमान और पारिस्थितिकी संतुलन सदियों से लिखित पुस्तकों में न होकर स्थानीय लोक भाषाओं मुहावरों कहावतें लोकगीतों और लोग गाथाओं के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होती है। जब कोई लोग भाषा लुप्त होता है तब वह उसके साथ–साथ सदियों से संचित वैज्ञानिक और व्यवहारिक ज्ञान के संपूर्ण विरासत भी नष्ट हो जाती है । लोकभाषा केवल वार्तालाप का माध्यम नहीं है वे समाज के अनुभव, दर्शन और पर्यावरण के साथ उसके संवाद का कोड है । जैसे छत्तीसगढ़ का हल्बी भाषा में चावल मिट्टी पौधों के प्रकार यह हवा की दिशाओं के लिए अलग–अलग शब्द हैं वह किसी मना किया अनुवादित भाषा में भी नहीं मिलते हैं। जनजातीय समुदाय की मौखिक गाथाएं धनकुल,जगार फाग गीतों में सुरक्षित हैं ।

वैश्वीकरण और मानक भाषाओं के बढ़ते बदलाव के कारण भाषाई संकट उत्पन्न हो गया है इसीलिए भाषा लोग भाषा और स्वदेशी ज्ञान का संरक्षण व संवर्धन की आवश्यकता है । मातृभाषा को प्राथमिक स्तर पर बच्चों को पढ़ना चाहिए,लोग भाषाओं के शब्द कोश व्याकरण और लोक कथाओं का संग्रह तैयार करना चाहिए, स्वदेशी ज्ञान के वाहकों को सामाजिक और आर्थिक मान्यता,लोकगीत लोक कथा लोक गाथा और औषधि नुस्खे का ऑडियो वीडियो रिकॉर्ड के माध्यम से डिजिटल संग्रह बनाना पंचायत के स्तर पर जैव विविधता और उससे जुड़े स्थानी पारंपरिक ज्ञान का आधिकारिक दस्तावेजीकरण करना चाहिए ।

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ की जनजातीय लोक परंपरा का अध्ययन यह दर्शाता है कि स्वदेशी ज्ञान को केवल पुरातन सांस्कृतिक धरोहर के रूप में सीमित रूप में देखने से उसकी वास्तविक उपादेयता अधूरी रह जाती है। यह ज्ञान प्राकृतिक, सामाजिक, रीति रिवाज, संस्कृत अभिव्यक्ति,सामुदायिक जीवन के आपसी संबंधों के परस्पर निर्माण से उत्पन्न एक जीवंत एवं गतिशील ज्ञान व्यवस्था है। गोड़,बैगा,मुरिया,मारिया हल्बा,उरांव,कवर समुदायों के लोक परंपराएं इस बात का प्रमाण है कि उनका दैनिक जीवन और सामाजिक स्वरूप अपने पारंपरिक पर्यावरण और सांस्कृतिक संदर्भ से जुड़ा हुआ है।अध्ययन का मुख्य निष्कर्ष यह है कि जनजातीय मौखिक साहित्य स्वदेशी ज्ञान का संरक्षण औरहस्तांतरण का मुख्य माध्यम है। लोकगीत, लोककथा, लोक गाथा, मिथक, मुहावरे,कहावत लोक पर्व अनुष्ठान केवल मनोरंजन यह धार्मिक क्रिया नहीं इनके जरिए समुदाय अपने अनुभव, सामाजिक मूल्य संस्कृत स्मृति, प्रकृति के प्रति संबंध को पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित करते हैं । इस दृष्टि से जनजातीय मौखिक परंपरा को ज्ञान संग्रहण और शिक्षा की मौखिक संस्था के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है ।

संदर्भ सूची

1. छत्तीसगढ़ जनजातीय एवं अनुसूचित जाति विकास विभाग (2024) प्रारंभिक जानकारी छत्तीसगढ़ शासन ।
2. छत्तीसगढ़ जनजातीय एवं अनुसूचित जाति विकास विभाग (2026) विभाग के संबंध में छत्तीसगढ़ शासन ।
3. छत्तीसगढ़ जनजातीय अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (2017) गोंड जनजाति का मानव शास्त्रीय अध्ययन, जनजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान रायपुर ।
4. छत्तीसगढ़ जनजाति एवं अनुसंधान संस्थान (2022), बैगा जनजाति रू तीज त्यौहार का अध्ययन, जनजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान छत्तीसगढ़ ।
5. तिवारी नंदकिशोर (2002), भरथरी –एक छत्तीसगढ़ी मौखिक गाथा, साहित्य अकादमी नई दिल्ली ।
6. छत्तीसगढ़ जनजाति एवं अनुसंधान संस्थान (2017) बैगा विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह मानव शास्त्रीय अध्ययन, जनजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान छत्तीसगढ़।
7. स्वामी पी. बी. और खान एम. छत्तीसगढ़ में भरथरी की गाथा, सहपि डिया ।
8. साहित्य अकादमी (2013), जनजाति भाषाओं में भारतीय साहित्य श्रृंखला, साहित्य अकादमी नई दिल्ली ।